☛ रौशन पाठक

पैसा कभी पूरा नहीं हो पाता

१

बचपन में एक दफा
आइस्क्रीम बेचने वाला आया ।
बहुत होशियारी से
की, मैंने उससे दरमोलाइ ।
वो डेढ से, सवा रुपये तक आया ।
एक ही था रुपया मेरे पाकेट में,
चार अना जोगाड़ नहीं कर पाया ।
अगर चवन्नी कम नहीं पड़ती,
तो आइस्क्रीम खा पाता ।
रह गया सिक्के को देख
यही सोच कर ललचाता, कि
पैसा कभी पूरा नहीं हो पाता ।

२

एक गर्लफ्रेंड थी मेरी
टीनएज की उम्र में ।
जो बड़ी खर्चीली थी और
उसके शौक से मेरी पाकेट
जरा शर्मीली थी ।
वो जिद करती कभी मूभी,
कभी डिस्को, कभी महॅगे उपहारों की।
ये सब कीमत थी, उसके
लुभावने अदाओं और इशारों की।
मैं हमेशा घुमाये चला जाता
उसे बहानो मे,
फिर होना क्या था,
वो छोड़ गई मुझे, कुछ इशारों
भरे तानों में ।
उसके पीछे अगर मैं पैसे लुटाता,
तो कैंटीन की उधारी कैसे चुकाता।
बस बेवश देखता रहा उसे जाते हुये,
हाथे पाकेट मे गई, तो रहा
ये सोच कर मुस्कुराता,
पैसा कभी पूरा नहीं हो पाता ।

३

सुन्दर, सुशील और भाग्यवान,
घुमने निकली थी, संग
अर्धांगिनी मेरी,
बस दिल बहलाने के लिये ।
जाने क्या हुआ, जिद कर बैठी,
हीरों का हार दिलाने के लिये।
मैंने देखा क्या चमकती हीरों की
हार है। फिर नजरें कीमत पर गयी,
मुॅह से निकला बेकार है।
वो जिद करती रही बच्चो की तरह,
मेरी फिक्र तो थी बच्चो की तरफ।
अगर वो हीरो का हार दिलाता,
तो मॅहगे स्कूल के फीस कहॉ भर पाता।
घर आते हुयेए रास्ते भर, उसकी
रोनी सूरत को देख, बार–बार
यही ख्याल दिल मे आता, कि
पैसा कभी पूरा नहीं हो पाता ।

४

है ढल चुकि अब उम्र काफी।
बच्चों के कंधे बनी है लाठी।
जो कर ना पाया, जिम्मेदारियों भरी
जिंदगी के दौड़ में, दिल करता है
वो सारे मौज उड़ाउॅ ।
पर बिन पैसे, ये हो कैसे ।
पहले से ही बोझ हूॅ, अपने बच्चों पर।
उनके आगे और कैसे हाथ फैलाउॅ।
बैठ अकेले कमरे में, यही लिखता
हूॅ चला जाता, कि
पैसा कभी पूरा नहीं हो पाता ।

५

कुछ लोग हैं आयें ले जाने के लिये।
तैयार मैं भी हूॅ, उनके कंधो
पर जाने के लिये ।
बस एक तमन्ना दिल में है,
कुछ और पैसे कमाता,
अगर कुछ और बचा पाता,
बिछड़ते बच्चो को, जरा और
देकर जा पाता,
तो चैन से श्यया पर सो पाता
फिर यही ख्याल हूॅ, दिल में लिये
दुनियॉ से रवाना हुये चला जाता, कि
पैसा कभी पूरा नहीं हो पाता ।